मुलायम, अमर : आज की राजनीति

फिल्मी दुनिया के और राजनीति के दलाल अमर सिंह को आखिरकार मुलायम सिंह ने पार्टी से बाहर का रास्ता दिखा ही दिया। दरअसल, मुलायम सिंह के पास ऐसा करने के सिवा और कोई विकल्प भी नहीं बचा था। मुलायम ने जिस हद तक संभव हो सकता था, अमर सिंह को मनाने की कोशिश की। पर अमर सिंह चाहते थे कि मुलायम के बाद पार्टी में उनका ही वर्चस्व रहे, उनके भाइयों और लड़के का नहीं। वैसे हर जगह मुलायम के साथ खड़े अमर सिंह को देखकर यह लगता था कि वे समाजवादी पार्टी में नंबर दो की भूमिका में हैं, पर असलियत तब सामने आई जब शिवपाल यादव ने इनकी क्लास लेनी शुरू की। दरअसल पार्टी में अमर सिंह की बढ़ती हैसियत से मुलायम के भाई और बेटे अंदर ही अंदर असंतुष्ट और खफ़ा थे। इधर मुलायम सिंह का बड़बोलापन भी बढ़ गया था और ऐसा लगता था कि सपा मुलायम नहीं, अमर सिंह के दम पर ही चल रही है।

उन्होंने पार्टी में पंच-सितारा संस्कृति का प्रवेश कराया था। फ़िल्मी दुनिया के अभिनेताओं और अभिनेत्रियों को लाया था जिनकी एक झलक देखने के लिए उत्तर प्रदेश के गंवई इलाके के लोग़ होड़ मचा देते थे, पर फिल्मी चकाचौंध के बावजूद अमर सिंह, मुलायम के लिए वोट बटोरने में कामयाब हो नहीं पाए और केवल बड़ी-बड़ी बातें बनाते रहे। अपने लिए राज्यसभा में सीट का प्रबंध कर ही लिया, क्योंकि यह आदमी कभी भी लोकसभा का चुनाव जीत नहीं सकता था। अब देखना यह है कि यह अपने आपको कहां खपाने की कोशिश करता है। मुलायम सिंह ने इसे पार्टी से निष्कासित कर अपने फायदे का काम किया है। यह मुलायम सिंह की छवि को खराब कर रहा था। ऐसा लगता था कि मुलायम इसके बिना एक कदम नहीं चल सकते। पर इसने फ़िल्मों से रिटायर हो चुकी अभिनेत्रियों को पार्टी से जोड़ने के सिवा और कुछ भी नहीं किया।

दो-तीन साल पहले इसने केंद्र सरकार पर यह आरोप लगाया था कि उनका और मुलायम सिंह का फ़ोन टेप किया जा रहा है। यह बात सच थी। इसका फ़ोन टेप किया जा रहा था। इससे पता चला कि यह यह फ़िल्मी दुनिया की हीरोइनों से 'रंगीली' बातें करता है। यह सच सामने आने पर इसने बेशर्मी के साथ कहा कि मैं रंगीला आदमी हूं और रंगीली बातें करता हूं। इसने एक बात और भी कही थी कि जब उसकी पत्नी और बेटियों को ऐतराज नहीं है तो लोगों को क्या परेशानी है। उस समय एक और शिगूफ़ा उठा था कि अमर सिंह मुलायम के लिए लड़कियों का इंतजाम करते हैं। पर अमर सिंह ने इससे साफ़ इनकार किया और कहा कि मुलायम सिंह एक ऐसे नेता हैं जिनके बारे में यह सोचा तक नहीं जा सकता। उन्होंने कहा था कि यह स्वप्न में भी सोचा नहीं जा सकता कि मुलायम सिंह जैसा नेता दैहिक सुख के लिए उनके सामने फ़िल्मी दुनिया की लड़कियों का प्रबंध करने को कहे। बहरहाल, टेपकांड का मामला दब गया अथवा दबा दिया गया, क्योंकि सत्तारूढ़ कांग्रेस से भी उनके अच्छे संबंध हैं।

जहां तक अमर सिंह का सवाल है, वे कह रहे हैं कि सपा के लिए उन्होंने इतना काम किया कि उनकी किडनी खराब हो

समाज को पिछड़ेपन की ओर ले जाने वाली इन प्रवृत्तियों पर लगाम लगाने के लिए जरूरत है एक व्यापक राजनीतिक-सामाजिक-सांस्कृतिक क्रांति की। इस क्रांति के लिए वस्तुगत परिस्थितियां पूर्णतः तैयार हैं, पर अभी कोई राजनीतिक-सांस्कृतिक संगठन इस दायित्व को पूरा करने के लिए तैयार नहीं दिखाई पड़ रहा है। परिणामस्वरूप राजनीति और संस्कृति के क्षेत्र में पतनशीलता और बढ़ेगी।

गई। अमर सिंह का यह कथन बेसिर-पैर का और हास्यास्पद है। किडनी खराब होने का मुलायम सिंह के लिए काम करने से कोई ताल्लुक नहीं है। अमर सिंह को यह नहीं भूलना चाहिए कि उन्हें राज्यसभा में पहुंचाने वाले मुलायम सिंह ही हैं। मुलायम सिंह द्वारा पार्टी से निकाले जाने के बाद अगर उनमें थोड़ी भी नैतिकता हो तो उन्हें राज्यसभा की सदस्यता से इस्तीफ़ा दे देना चाहिए। पर अमर सिंह जैसे व्यक्ति से नैतिकता की उम्मीद करना निरर्थक है।

यह आदमी पूरी तरह अवसरवादी, मतलबी और अय्याश है। फ़िल्मी दुनिया में इसका सबसे बड़ा दोस्त अब मत्था टेकने गुजरात के मुख्यमंत्री मोदी के पास जा रहा है। मोदी को अपनी बहुचर्चित फ़िल्म 'पा' दिखाकर उसने गुजरात में इसे टैक्स फ्री भी करवा लिया है। गौरतलब है कि समाजवादी पार्टी और भाजपा में छत्तीस का आंकड़ा है। अब सवाल यह है कि समाजवादी पार्टी से खदेड़ दिए जाने के बाद राजनीति का यह दलाल किस पार्टी में जाएगा। सूत्रों का कहना है कि अब यह कांग्रेस में जाने के टांके भिड़ा रहा है और इसके लिए सोनिया गांधी से मिलने की जुगत में है।

कांग्रेस भी एक नैतिकताविहीन और सिद्धांतहीन पार्टी है, इसलिए इस बात में कोई आश्चर्य नहीं हो सकता कि सोनिया इसे अपनी पार्टी में ले लें। पर यह इसी शर्त पर किसी पार्टी में जाएगा जब उसे वहां कोई बड़ा पद मिले। कांग्रेस में बड़े पदों की कोई कमी नहीं है। सोनिया चाहें तो उसे मंत्री पद भी दे सकती हैं।

दूसरी तरफ़, यह मुलायम की दुश्मन नंबर एक मायावती के पाले में जाने की कोशिश कर सकता है। मायावती के पास भी उसे जगह मिल सकती है, क्योंकि 'घर का भेदी लंका ढाएगा'।

जहां तक मुलायम का सवाल है, उत्तर प्रदेश की राजनीति के साथ-साथ केन्द्र की राजनीति में भी उनकी स्थिति कमजोर होती जा रही है। उनके पतन की शुरूआत तभी से हुई है जब से उन्होंने अमर सिंह जैसे भड़ैत को अपना प्रमुख सहयोगी और सलाहकार बनाया। अमर सिंह ने मुलायम की लुटिया डुबोने में प्रमुख भूमिका निभाई, लेकिन जब तक मुलायम सिंह उसकी असलियत को समझते, वह उनकी नाव में छेद कर चुका था। आज की राजनीति में भाजपा और वामपंथियों को छोड़कर सभी दल परिवारवाद की राजनीति कर रहे हैं जिसमें सबसे आगे और सबसे पुरानी है कांग्रेस। कांग्रेस के नक्शे-कदम पर चलते हुए सभी दलों ने परिवारवाद को बढ़ावा दिया और इस तरह पूंजीवादी जनतंत्र में यह सामंती प्रवृति विद्यमान रही, बल्कि यो कहें कि इसका लगातार विकास होता चला गया। कोई भी नेता चाहे वह किसी भी पार्टी का हो अपने जीते-जी अपने पुत्रों-पुत्रियों को राजनीति के क्षेत्र में सक्रिय कर देता है और हो सके तो उसके लिए एक अच्छे पद का इंतजाम कर देता है। यह भारतीय पूंजीवादी राजनीति की सबसे बड़ी विशेषता है। इससे यह जाहिर होता है कि सामंती अवशेष सिर्फ़ राजनीति और समाज-व्यवस्था में ही नहीं, राजनीति में भी पूरी तरह मौजूद हैं। ये तब तक मौजूद रहेंगे जब तक कि वर्तमान शासन व्यवस्था और संस्कृति कायम रहेगी। समाज को पिछड़ेपन की ओर ले जाने वाली इन प्रवृत्तियों पर लगाम लगाने के लिए जरूरत है एक व्यापक राजनीतिक-सामाजिक-सांस्कृतिक क्रांति की। इस क्रांति के लिए वस्तुगत परिस्थितियां पूर्णतः तैयार हैं, पर अभी कोई राजनीतिक-सांस्कृतिक संगठन इस दायित्व को पूरा करने के लिए तैयार नहीं दिखाई पड़ रहा है। परिणामस्वरूप राजनीति और संस्कृति के क्षेत्र में पतनशीलता और बढ़ेगी। इस दौर में अमर सिंह जैसे भड़ैतों की संख्या और भी बढ़ेगी जो जनता के धन को बेरहमी से लूटकर अय्याशियां करेंगे और जनता के सामने चुपचाप इनकी बाजीगरी देखने के अलावा और कोई चारा नहीं रहेगा।

- मनोज कुमार झा

मीडिया और विज्ञापन : लोग़ों के बरगलाने के साधन

पत्रकारिता की भूमिका लोग़ों में तर्कपरकता और जागरूकता पैदा करना है। पत्रकारिता के माध्यम से देश और दुनिया में जो हो रहा है, उसकी जानकारी देना तो है ही, साथ में अंधविश्वास और धार्मिक रूढ़िवाद से लोग़ों को मुक्त करने का प्रयास करना भी है। अन्याय, शोषण और भ्रष्टाचार के विरुद्ध चेतना जागृत करने का काम पत्रकारिता का है। हिंदी पत्रकारिता ने शुरुआती दौर में अपनी इस क्रांतिकारी भूमिका को निभाया भी। उस दौर में, ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ़ चेतना जागृत करने में पत्रकारिता ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई। उन दिनों पत्रकारिता एक मिशन थी, व्यवसाय नहीं। पर आज पत्रकारिता ने व्यवसाय क्या, एक बड़े उद्योग का रूप ले लिया है। सभी बड़े पूंजीपति घराने पत्रकारिता का धंधा कर रहे हैं। इसके अलावा अब टीवी मीडिया और इंटरनेट का प्रभाव भी बढ़ता चला जा रहा है। टीवी और इंटरनेट के आ जाने से कहा जा रहा है कि एक सूचना क्रांति का दौर शुरू हो गया है। यह ठीक है कि टीवी और इंटरनेट के माध्यम से हमें तत्काल दुनिया भर की ख़बरें (सूचनायें) मिल जाती हैं, पर पत्रकारिता की भूमिका महज सूचना देने तक सीमित नहीं है। इसका उद्देश्य कहीं और ज़्यादा व्यापक है।

पर पूंजीपति कोई भी काम मुनाफ़े और सिर्फ़ मुनाफे के लिए करता है। मीडिया उद्योग का संचालन भी उसके लिए मुनाफ़े का एक बड़ा जरिया है। यह मुनाफ़ा उसे मिलता है विज्ञापनों से। जिस अख़बार और टीवी चैनल को जितने अधिक विज्ञापन मिलते हैं, उसका मुनाफ़ा उतना ही ज़्यादा होता है। मीडिया में विज्ञापन इस कदर हावी हो गये हैं कि ख़बरों को विशेष तव्वजो नहीं दी जाती। इस बारे में एक प्रसिद्ध पत्रकार और कवि ने कहा था कि अब विज्ञापनों से बची हुई जगह में ख़बरें छापी जाती हैं। यह सच है। कभी-कभी तो एक-दो ख़बरों के अलावा पूरा का पूरा फ्रंट पेज ही विज्ञापनों को समर्पित कर दिया जाता है। और विज्ञापन भी कैसे? अभी हाल में एक बड़े और कई शहरों से प्रकाशित होने वाले अख़बार ने फ्रंट पेज के आधे हिस्से में दो बाबाओं के विज्ञापन छापे जिनमें यह दावा किया गया था कि वे किसी भी समस्या का हल चुटकी बजा के कर देंगे, बशर्ते उनसे फ़ोन पर समय लेकर मिल तो लें।

यानी जो बाबा पहले हिमालय की कंदराओं में साधना करके जीवन गुज़ार देते थे, उनकी वर्तमान पीढ़ी अब विशुद्ध व्यवसाय पर उतर आई है और अख़बारों में हज़ारों-लाखों के विज्ञापन छपवा रही है। इससे समझा जा सकता है कि उनके ढोंग और पाखंड का व्यवसाय कितना बड़ा है। अपने इसी ढोंग और पाखंड के व्यवसाय को और आगे बढ़ाने के लिए ये बाबा शहर-दर-शहर भ्रमण करते रहते हैं और बड़े-बड़े होटलों में टिक कर अख़बारों में विज्ञापन देते हैं। फ़िर गांठ के पूरे और अक्ल के अंधे लोग उनके आगे मत्था टेकने और अपनी अनगिनत समस्याओं का हल करवाने के लिए बाबाओं से मिलने चले आते हैं और फ़ीस के रूप में भारी-भरकम चढ़ावा चढ़ाते हैं। इसी तरह ये बाबा विज्ञापनबाजी करते हुए हर जगह लोगों

जहां तक टीवी का सवाल है, उस पर हर पांच-दस मिनट के अंतराल पर विज्ञापन दिखाए जाते हैं। इसमें भी अंधविश्वास को बढ़ावा देने वाले, उदाहरण के लिए बुरी नज़र से बचाने के यंत्र आदि होते हैं। इस तरह के विज्ञापन इतनी ज़्यादा बार आते हैं कि इन विज्ञापनों से दर्शक ऊब जाते हैं और विज्ञापन आते ही चैनल बदलने लगते हैं। पर हर चैनल का एक ही हाल है। रह गया इंटरनेट तो इस पर खुलेआम कॉलगर्ल्स और एस्कॉर्ट जो कॉलगर्ल का ही एक रूप है, के विज्ञापन आते हैं, बकायदा कॉलगर्ल्स की लाइव तस्वीर, उम्र और प्रतिघंटे रेट के साथ। उनके साथ अगर कुछ दिन गुजारने हों अथवा यात्रा के दौरान उन्हें साथ रखना हो तो उसके भी रेट अलग से दिए जाते हैं।

को ठगने का धंधा चलाते रहते हैं। ये ठहरते हैं बड़े-बड़े होटलों में, क्योंकि ये जितने बड़े होटलों में ठहरेंगे, अंधविश्वास की मारी जनता यह समझेगी कि वह उतना ही बड़ा बाबा है और सचमुच उनकी समस्या का समाधान कर देगा। ये बाबा बड़े ही अय्याश किस्म के होते हैं और दिनभर गांजे का दम लगाते इसी फ़िराक में रहते हैं कि कैसे लोग़ों की जेब कतरी जाए। इनके पास यदि कोई औरत संतान नहीं होने की समस्या लेकर आती है तो उसे अकेले में बुलाकर अश्लील सवाल-जवाब करते हैं और भभूत आदि में नशीले पदार्थ मिलाकर उसे खिला देते हैं।

नशे में जब औरत बेसुध हो जाती है तो ये ढोंगी और छली बाबा उसके साथ बलात्कार तक कर डालते हैं। ऐसी कई घटनाएं प्रकाश में आ चुकी हैं। अधिक घटनाएं प्रकाश में इसलिए नहीं आ पाती क्योंकि पीड़ित औरत लोकलाज के भय से चुप रहने में ही अपनी भलाई समझती है। बहुत से बाबा भरपूर कमाई कर लेने के बाद चोला बदलकर सेक्स की भूख शांत करने वेश्याओं के पास भी चले जाते हैं।

अब अख़बारों की भूमिका की बात की जाए। यदि अख़बार वास्तव में जनहितैषी हैं तो वह कभी भी और किसी भी कीमत पर ऐसी ढोंगी और लोगों को ठगने वाले बाबाओं के विज्ञापन नहीं छपेंगे। पर नहीं, अख़बार को तो पैसा कमाना है और इसका एकमात्र जरिया है विज्ञापन, इसलिए वह बाबाओं के क्या वेश्याओं तक के विज्ञापन छापेगा और अप्रत्यक्ष रूप से अभी भी छाप रहा है।

फ्रैंड्स क्लब, फ़ोन पर सुंदर युवतियों से बातें और मसाज कर दिन भर में हज़ारों कमाएं आदि वेश्यावृति के विज्ञापन ही तो होते हैं जिनके चक्कर में पैसे वाले युवा फंस जाते हैं और काफ़ी पैसे खर्च करने के बाद भी कुछ नहीं पाते, बल्कि ब्लैकमेल तक किए जाने लगते हैं। इसी प्रकार कामशक्तिवर्द्धक दवाओं के विज्ञापन बेहद ही अश्लील तरीके से गंदी भाषा में छापे जाते हैं। क्लासीफाइड विज्ञापन वाले पेज में तो सिर्फ़ सेक्स संबंधी विज्ञापनों की ही भरमार होती है। जापानी, जर्मन और अमेरिकन लिंगवर्द्धक यंत्रों के विज्ञापन थोक के भाव में छापे जाते हैं। इसके अलावा काले जादू का इल्म, हर समस्या का समाधान मिनटों में जैसे विज्ञापन भी काफ़ी होते हैं। रोज़गार संबंधी जो विज्ञापन क्लासीफाइड के अंतर्गत छपते हैं, लगभग सभी फ़र्जी होते हैं। इनके चक्कर में पड़ने वाले कुछ कमाएंगे क्या, गंवाते ही गंवाते हैं?

जहां तक टीवी का सवाल है, उस पर हर पांच-दस मिनट के अंतराल पर विज्ञापन दिखाए जाते हैं। इसमें भी अंधविश्वास को बढ़ावा देने वाले, उदाहरण के लिए बुरी नज़र से बचाने के यंत्र आदि होते हैं। इस तरह के विज्ञापन इतनी ज़्यादा बार आते हैं कि इन विज्ञापनों से दर्शक ऊब जाते हैं और विज्ञापन आते ही चैनल बदलने लगते हैं।

पर हर चैनल का एक ही हाल है। रह गया इंटरनेट तो इस पर खुलेआम कॉलगर्ल्स और एस्कॉर्ट जो कॉलगर्ल का ही एक रूप है, के विज्ञापन आते हैं, बकायदा कॉलगर्ल्स की लाइव तस्वीर, उम्र और प्रतिघंटे रेट के साथ। उनके साथ अगर कुछ दिन गुजारने हों अथवा यात्रा के दौरान उन्हें साथ रखना हो तो उसके भी रेट अलग से दिए जाते हैं। इस तरह, 'यह तो हद है' मुहावरा यहां पूरी तरह फिट बैठता है।

- मनोज कुमार झा